edit:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:26 PM Page 192

पाँचवाँ स्तंभ

स्वावलंबन मंत्र

स्वावलंबन मंत्र

"नानाजी नहीं रहे।" खबर सुनते ही नानाजी के साथ बिताए ढेर सारे प्रसंगों की स्मृतियाँ मानस सागर में गडमगड होने लगीं। एक सप्ताह पूर्व ही इंदौर में भा.ज.पा द्वारा आयोजित "अंत्योदय" (स्वयंसेवी संगठनों के रचनात्मक कार्यकलापों और वस्तुओं की प्रदर्शनी) में दीनदयाल उपाध्याय शोध संस्थान के द्वारा लगाए गए स्टॉल पर खड़ी थी। उन कार्यकर्ताओं से नानाजी के चार दशक पूर्व के कार्यकलापों की चर्चा हो रही थी। रामदेव प्रसाद (बिहार के नेता) ने कहा, "नानाजी हमें सलीके से रहना भी सिखाते थे।" रामदेवजी नानाजी के संग बिताए प्रसंगों का वर्णन करने लगे। मैंने कहा, "हम उन्हें ही टीनोपोल नेता कहते थे।" स्टॉल पर खड़े युवक-युवतियों के चेहरे खिल गए। मानो, मैंने उनके मन की बात कह दी हो या नानाजी की विस्तृत जीवन कथा को शीर्षक दे दिया हो। उनमें से एक ने कहा, "आपने बहुत अच्छा नाम दिया नानाजी को।" यह सच था। उन दिनों अधिकांश कार्यकर्ता अभावों में ही जीते थे। पर नानाजी उन्हें फटे कपड़ों को भी साफ और सलीके से रखना सिखाते थे। नानाजी तो नानाजी ही थे। कुशल संगठन शिल्पी। घर-घर जाना, ठहरना। कार्यकर्ताओं के घरों में महिला सदस्यों को भी कुछ-न-कुछ सिखाना। उनका दु:ख-सुख सुनना। घर के बच्चों से उनके स्कूल में सिखाए गए शिशु गीत की पंक्तियों से लेकर क्रिकेट या अन्य खेलों की जानकारी लेते-लेते उनके मित्र बन जाना, घर के बुजुर्गों से उस क्षेत्र की विशेषताओं की जानकारी लेना, चाहे गौ पालन हो या कृषि। घर के हर उम्र के सदस्य के लिए उनके पास हर प्रकार की जानकारियाँ रहती थीं। इसलिए नानाजी उस घर में रम जाते और घर के सभी सदस्य उनके आत्मीय हो जाते। नानाजी जनसंघ पार्टी का कोई एक सदस्य नहीं बनाते थे, वे परिवार जोड़ते थे। परिवारों के अंतरंग बनकर समाज की उन समस्याओं से रू-ब-रू होते थे, जिनके निराकरण के लिए राजनैतिक दलों को प्रयासरत रहना चाहिए।

नानाजी के बारे में यह कहा जा सकता है कि वे जिस घर में दो-तीन दिन ठहरते थे, उस घर के घरवाले हो जाते थे और घर वाले सब पुरुष बाहर वाले। परिवार की तीनों पीढ़ियों से उनकी खूब पटने लगती थी। घरों के बच्चों और महिलाओं के भी नाम उन्हें स्मरण हो जाते थे। परिवारों को जोड़कर पार्टी का विस्तार करने की कला में सिद्धहस्त थे नानाजी।

नानाजी चिड़िया की भूमिका में थे। सारे देश में घूमते। एक खेत का दाना दूसरे खेतों में डालते। बिहार और उत्तर प्रदेश के रसोईघरों में महाराष्ट्र की पूरनपूड़ी और श्रीखंड का प्रवेश करा देते तो महाराष्ट्र के घरों में चूड़ा-दही और छोले-भटूरे बनाने और खाने का तरीका बतला आते। वे विचारक, प्रचारक और विस्तारक तो थे ही। कार्यकर्ताओं को सक्रिय रखने के लिए उनके पास ढेर सारे नुस्खे थे। अकर्मण्यता उन्हें रास नहीं आती थी। "जागते रहो" का ही संदेश फैलाते थे। दरअसल उनके संग साथ रहकर कोई अकर्मण्य हो भी नहीं सकता था।

राजनैतिक कार्यकर्ताओं का जीवन भी बहुत व्यस्त होता था। साधन कम थे। सुविधाएं सुलभ नहीं। साधना कठिन थी। कार्यकर्तागण कार्यक्रमों के आयोजन में थक जाते। नानाजी एक सिद्ध मनोवैज्ञानिक भी थे। वे समझते थे कि राजनैतिक कार्यक्रमों से कार्यकर्ता ऊब कर भाग जाएगा। इसलिए दल के कार्यक्रमों से हटकर भी उन्हें काम बताते थे ताकि कार्यकर्ता के मन में ऊब या दल के कार्य से विरक्ति न हो। संभवत: इसलिए वे राजनैतिक नेता से पूर्व सामाजिक कार्यकर्ता थे। समाज के लिए कुछ-न-कुछ रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा अनवरत देते रहे। मात्र वक्तव्य नहीं, व्यवहार में भी। मनसा, वाचा, कर्मणा समाज के बारे में चिंतन।

महिलाओं के विकास के बारे में नानाजी की दृष्टि स्पष्ट थी। वे उनके प्राकृतिक दायित्व मातृत्व को प्रमुखता देते थे तो अत्याधुनिक वैज्ञानिक खोजों के प्रति महिलाओं को जागरूक बनाने के प्रयत्न में रहते। मैंने भा.ज.पा महिला मोर्चा द्वारा 1992 में एक स्मारिका प्रकाशित की थी- "दशक के झरोखे से।" उसमें कई विचारोत्तोजक आलेख थे तो महिला मोर्चा की गतिविधियों की रिपोर्ट और शीर्ष नेताओं के संदेश भी। महिलाओं की दशा और उनके विकास की दिशा भी। मैंने नानाजी को एक प्रति भेंट की। आशा थी कि वे उसकी थोड़ी बहुत प्रशंसा करेंगे। वे उलट-पुलट कर देखते रहे। विना कुछ बोले दाहिनी ओर मेज पर रख दिया। मैंने कहा, "नानाजी! वही मेहनत करके हमने स्मारिका प्रकाशित की है। आप कुछ कहिए तो कैसी लगी?" उन्होंने तपाक से कहा, "क्या कहूँ? इसमें माँ कहाँ है?"

मैं स्तब्ध रह गई। मानो मुझे महिला विकास की दिशा मिल गई हो। महिलाओं की पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक समस्याओं के निदान ढूँढने की राजनैतिक पहल क्या हो? माँ ही तो है स्त्री। स्त्री को नारीत्व प्रदान करने के प्रयास भी उसके मातृत्व की रक्षा ही तो है। उन्होंने स्वयं अपने सामाजिक प्रयासों में इस बात का हर कदम पर ध्यान रखा। सफल राजनैतिक नेता की पहचान अपने पीछे कार्यकर्ताओं की नई पीढ़ी तैयार करनी होती है। नानाजी ने राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र में भी कर्मयोगी कार्यकर्ताओं की श्रृंखला खड़ी कर दी। नवयुवक-नवयुवतियों नानाजी के सिद्धांतों और व्यवहार से प्रभावित होकर उनके आदर्श कार्यों में तन-मन से जुट गए। नानाजी मानव-शिल्पी थे। उन्होंने समाज शिल्पी दम्पत्तियों का चयन कर सर्वप्रथम उन्हें गढ़ा। उनकी मनसा, वाचा की तैयारी कर ही गाँवों में भेजा। परिवार और गाँवों का सर्वांगीण और समग्र विकास उनका लक्ष्य था। परिवार में हर उम्र के सदस्यों की समस्याओं का अध्ययन और निदान तो गाँव के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य ही उनकी सामाजिक कार्य साधना थी। 1980 में वे 60 वर्ष के हुए थे। भारतीय जनसंघ पार्टी, जनता पार्टी से लेकर भारतीय जनता पार्टी में शीर्ष पर रहे। उन्होंने राजनीति छोड़ दी। समाज कार्य में अग्रसर हो गए। सर्वप्रथम उत्तर प्रदेश में गोंडा को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। फिर चित्रकूट में स्थायी रूप से कार्य करना प्रारंभ किया। चित्रकूट में कई संस्थाओं का निर्माण किया। चित्रकूट में राम के विना क्या हो सकता था। अपने निवास के परिसर का नाम ही "सियाराम कुटीर" रखा। एक से एक राजनीतिज्ञ, सामाजिक नेता, स्वैच्छिक क्षेत्र में कार्यरत समाजशिल्पी उनके पास आते रहे। उनसे राजनीति और सामाजिक कार्य के गुर सीखते रहे। नानाजी राजनीति से ऊपर उठ गए थे। उनका साध्य संपूर्ण समाज हो गया था। गाँव का सर्वांगीण विकास। उनके युवा मित्र ही अधिक थे। युवाओं को उनसे मिलती थी प्रेरणा। युवाओं से नानाजी को मिलती थी शक्ति, संबल। दोनों एक-दूसरे के पूरक। नानाजी आधुनिक भारत के इतिहास के पन्नों पर कई भूमिकाओं में अंकित रहेंगे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के इतिहास में सफल प्रचारक की सूची में, तो राजनैतिक दल जनसंघ पार्टी के विस्तारक की सूची में, 1975 में इंदिरा गाँधी द्वारा लगाए आपातकाल के नियमों को धता बताते हुए जेल के सीखचों के बाहर ही बाहर रहते हुए सक्रिय विरोधी के रूप में तो जयप्रकाश नारायण के समग्र क्रांति आंदोलन के पुरोधा बनकर। विभिन्न दलों के नेताओं को एक मंच पर बैठाकर जनता पार्टी बनवाने, उसकी जीत पर सरकार बनवाने से लेकर समाज सेवा को सही दृष्टि देने के पन्नों पर उनका नाम अंकित रहेगा।

देशभर में अभी लाखों लोग हैं जो उनके करीब रहे हैं। उनसे बहुत कुछ सीखा है। करोड़ों जो दूर से ही उनकी समाजसेवा दृष्टि के कायल रहे हैं। पं. दीनदयाल उपाध्याय की दूरदृष्टि "एकात्म मानववाद" को उन्होंने व्यवहार में ढालने की सफल कोशिश की। राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र में कार्य करते कई लोग अपने काल में प्रभावी रहते हैं। पार्टियों और संस्थाओं का निर्माण करते हैं। पर उनके जाने के बाद न दल रहते न संस्थाएं। वे अपनी दृष्टि और सपना दूसरी आँखों में नहीं डाल पाते। वे अपने सपनों के अनुरूप युवा पीढ़ी नहीं गढ़ पाते। नाना जी ने ऐसा नहीं किया। वे तो कार्यकर्ताओं के सर्जक रहे हैं। उनके समाजसेवी मानस और व्यवहार के भी।

इसलिए हम कैसे मान लें कि "नानाजी नहीं रहे।" पिछले वर्ष मैं एक बड़े महिला सम्मेलन में चित्रकूट गई थी। उन लाखों महिलाओं का सम्मेलन था, जो नानाजी के सपनों के गाँव बनाने में लगी हैं। मंच पर समाज क्षेत्र में कार्यरत देशभर से आया महिला नेतृत्व। नानाजी मंच पर नहीं आए। विशाल मंच के पीछे गाड़ी में बैठे थे। पूछने पर उनकी शारीरिक स्थिति का पता चला। दिल्ली लौटी। किसी ने पूछा, "नानाजी कैसे हैं?" मैंने कहा, "नानाजी सुनते नहीं, चलते नहीं, देखते नहीं, नानाजी स्वस्थ हैं।" सुनने वाला थोड़ी देर तक सोचता रहा। पर सच्चाई यही थी। नानाजी की स्थिति, "विनु पग चलै, सुनै विनु काना" ही की थी। कई वर्षों से पांवों ने नाना जी के "चरैवेति" संकल्प में साथ छोड़ दिया था। फिर भी नानाजी चलते रहे। उनके अपनों के पांव और हाथ के साथ हृदय तो थे न, जिनमें भरी थी अपने नानाजी के प्रति श्रद्धा। उनके सामाजिक सरोकार के प्रति आस्था। उन्होंने सारे पद छोड़ दिए थे।

27 फरवरी को नानाजी की सांस ने भी उनके शरीर का साथ छोड़ दिया। पर शरीर अभी भी है। उसे पंचतत्व में विलीन नहीं होने दिया। नानाजी की सदइच्छा थी। उन्होंने 1997 में ही देहदान कर दिया था। अस्पताल में बच्चे उनके अंगों से मानव शरीर के शिल्प का अध्ययन करेंगे। मानव शिल्पी नानाजी के शरीर का भी तो कोई शिल्पकार था। एक वार में चित्रकूट में ही राजमाता विजयाराजे सिंधिया जी के साथ ठहरी थी। राजमाता जी को नानाजी ने अपने सारे प्रकल्प घुमाकर दिखाया। गाड़ी में मैं भी बैठी थी। मैंने कहा, "राजमाता जी! मैंने अभी एक उपन्यास लिखा है। मैंने अटल जी को पढ़ने के लिए दिया। उन्होंने कहा, "इसमें नानाजी ही प्रमुख नायक हैं।" नानाजी ने सुन लिया था। बोले, "तुम कागज पर लिखती हो। मैं जमीन पर लिखता हूँ।" सच था। नानाजी ने जमीन पर ही लिखा-

"सात समंदर मसि करूँ। लेखनी सब वनराई,
धरती सब कागद करूँ, हरिगुण लिखा न जाई।"

जमीन में डाले अन्न का एक दाना सहस्र दानों को जन्म देता है। युगों-युगों तक चलता रहता है। आशा की जाती है कि नानाजी द्वारा समाज में डाले समग्र समाज विकास के बीज फूलते-फलते रहेंगे। विचार अमर हो जाएगा, जब व्यवहार में ढलता रहेगा। नानाजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि उनके विचारों को व्यवहार में ढालते रहना ही होगा। हमारी पत्रिका उनको श्रद्धांजलि देने के लिए रंग-विरंगे पुष्प उन्हीं के द्वारा लगाए पौधों से चुनकर लाई है। "त्वदीयं वस्तु गोविंदम्, तुभ्यमेव समर्पय।"

नानाजी के संगी-साथियों के संस्मरण उन्हें ही समर्पित। "पाँचवाँ स्तंभ" पत्रिका भी उनके द्वारा बताई दिशा में चलती रहेगी।

श्रद्धांजलि सहित।

डा. मृदुला सिन्हा